**Seventeenth Loksabha**

>

Title: Need to include 'Alha Khand'- epic poetic works in UNESCO's Intangible Cultural Heritage. - Laid

**कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर)**: यूनेस्को के विगत वर्ष 2021 के दिसम्बर माह में कोलकाता की दुर्गा पूजा को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी है | इसके पूर्व 'कुंभ मेला' ,'योग' और पारसी त्यौहार 'नोरोज' को भी इस विरासत की सूची में शामिल किया गया था । कोलकाता की दुर्गा पूजा सहित देश की अन्य सांस्कृतिक धरोहरों का यूनिस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल होना पूरे देश के लिए गर्व की बात है |

इसी क्रम में मै सरकार का ध्यान लोक महाकाव्य " आल्हा खंड "की तरफ आकृष्ट करना चाहूँगा जो विश्व के संभवत: एकमात्र खंड काव्य है जो अभी भी मौखिक रूप में जीवित है और लगभग 1000 वर्षों से बुंदेलखंड सहित देश के विभिन्न भागों में मुख्य रूप से हिंदी भाषी क्षेत्रों में गाया जाता है| यह अपने इतिहास और स्मृति तथा समुदाय की धारणा से जुड़ा हुआ है । बुंदेलखंड की सांस्कृतिक पहचान तो "आल्हा "ही है और इसको बुंदेलखंड से अलग करके सोचा ही नहीं जा सकता है |

"आल्हाखण्ड" जहाँ जोश और उत्साह का संचार करता है वही इसका उद्दात सामाजिक समरसतायुक्त पक्ष भी है| इसके कारण यह बुन्देली संस्कृति का अभिन्न अंग बना रहा है | "आल्हा "गायन में सभी समुदाय के लोग भाग लेते है और गायन के समय ऊच-नीच किसी भी तरह का भाव नहीं होता है | किसी भी भेदभाव के बिना, सभी तरह के लोगों के उत्साह के साथ इसमें भाग लेने से सामाजिक समरसता का विकास होता है और सभी प्रेम और सदभावना के रंग में ही रंग जाते हैं |इसके साथ यद्दपि 'आल्हा 'में विभिन्न लोक गाथा के रूप मेंविभिन्न युद्ध संघर्षों का उल्लेख है परन्तु यह देशभक्ति ,बलिदान और शांति का ही सन्देश देता है| एक लोक खंड काव्य के रूप में, आल्हा गायन दर्शाता है कि देशभक्ति, बलिदान, सहिष्णुता और सम्मिलन समकालीन दुनिया के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं ।

अत: मेरा सरकार से यह अनुरोध है कि देश की अन्य सांस्कृतिक धरोहरों के समान आल्हा को भी " अमूर्त सांस्कृतिक विरासत "में शामिल करने के हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए|